कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-2 [SST] Minor - 01 [Revised_ANSWER KEY] HELD ON : 11/08/2025

Q.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
Ans.	4	3	2	2	2	1	3	4	2	2	1	3	2	1	2	4	4	4	3	2
Q.	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
Ans.	3	3	4	1	3	3	2	4	4	1	2	1	2	1	1	1	2	2	4	3
Q.	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
Ans.	1	4	3	4	3	2	4	3	3	3	1	2	1	2	2	1	1	1	4	3
Q.	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
Ans.	2	3	3	2	2	1	2	3	3	2	3	2	2	3	3	4	4	1	1	2
Q.	**81**	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**	**91**	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
Ans.	3	2	3	4	1	2	4	2	1	2	4	3	4	2	3	3	3	2	2	2
Q.	**101**	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**	**111**	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
Ans.	3	2	3	1	4	1	2	3	3	4	3	4	3	2	2	1	4	2	4	2
Q.	**121**	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
Ans.	1	3	1	2	3	1	4	2	3	1	1	2	4	4	4	1	1	1	1	1
Q.	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**										
Ans.	3	1	1	2	4	1	4	4	3	2										

1. Ans. 4

- राजस्थान में स्थित विभिन्न स्थलाकृत्तियों का उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित क्रम –

नाली– उत्तरी राजस्थान में गंगानगर व हनुमानगढ़ में घग्घर नदी का क्षेत्र

धरियन – पश्चिमी राजस्थान में स्थानांतरणशील बालुका स्तूप

ऊपरमाल– दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में स्थित पठारी क्षेत्र

भोमट– दक्षिणी राजस्थान में डूंगरपुर-उदयपुर का क्षेत्र

2. Ans. 3

- बनास बेसिन अधिकांशत: टोंक जिले में विस्तरित है।
- अरावली पर्वत श्रेणी तथा चम्बल बेसिन के बीच का भाग बनास-बाणगंगा बेसिन के नाम से जाना जाता है।
- इस मैदान का सबसे उत्तरी भाग जिसमें जयपुर से भरतपुर तक का क्षेत्र शामिल है, वह बाणगंगा बेसिन के अन्तर्गत आता है।
- बनास बेसिन को दो उपभागों में बाँटा गया है– **मालपुरा करौली का मैदान तथा मेवाड़ का मैदान**

3. Ans. 2

- अरावली विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी है।
- उत्तर-पूर्वी मैदान गंगा – यमुना नदीयों द्वारा निर्मित मैदान का भाग है।
- पश्चिमी बालुका मैदान टेथिस सागर का अवशेष है।
- दक्षिणी पूर्वी पठार गोंडवाना लैण्ड का विस्तारित भाग है।

4. Ans. 2

- मुकुन्दरा पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर चन्दवाड़ा क्षेत्र में स्थित है, जो 517 मीटर ऊँचा है।
- शाहबाद क्षेत्र – यह दक्षिणी पूर्वी पठार का उपभाग है।
- सतूर क्षेत्र – यह बूँदी की पहाड़ियों का सर्वोच्च शिखर है।

5. Ans. 2

- झालावाड़ पठार का उत्तरी-पश्चिमी भाग 'डग-गंगधार की उच्च भूमि' कहलाता है। यह झालावाड़ जिलें में स्थित है
- यह मालवा पठार का उत्तरी भाग है।
- यह पठार संभवत: 450 मीटर ऊँचाई का है।
- यह पठार सर्वत्र धरालीय एकरूपता नहीं रखता है।

6. Ans. 1

- **तारा स्तूप**– अनेक भुजाओं वाले तारे जैसी आकृति के स्तूप। उदाहरण– **मोहनगढ़ क्षेत्र (जैसलमेर-पोकरण) में एवं सूरतगढ़ क्षेत्र (गंगानगर) में।**

7. Ans. 3

- देलवाड़ा (सिरोही) – 1442 मीटर
- ऋषिकेश (सिरोही) – 1017 मीटर
- कमलनाथ (उदयपुर) – 1001 मीटर

8. Ans. 4

- **बनास बेसिन को दो उपभागों में बाँटा गया है–**

(a) मालपुरा करौली का मैदान– यह बनास बेसिन का उत्तरी भाग है, जिसमें टोंक, सवाईमाधोपुर, करौली, दौसा आदि जिलों का क्षेत्र आता है। हैरोन महोदय ने इस क्षेत्र की पहचान तृतीय पेनिप्लेन के रूप में की।

(b) मेवाड़ का मैदान– यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है जिसमें राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिलों का क्षेत्र आता है।

- मेवाड़ के मैदान में देवगढ़ के निकट अरावली के पूर्वी भागों में **टीलेनुमा पीडमान्ट मैदान** है।

9. Ans. 2

- उत्तरी अरावली से संबंधित शिखर समूह सिरावास (अलवर) बबाई (झुंझुनूं) है।
- लीलागढ़ व काटड़ा (दक्षिणी अरावली)– उदयपुर में
- सायरा व कमलनाथ (दक्षिणी अरावली)– उदयपुर में
- धोनिया-डूँगर व ऋषिकेश (दक्षिणी अरावली)– राजसमंद-उदयपुर में

10. Ans. 2

- **मेवाड़ का मैदान**– यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है जिसमें राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिलों का क्षेत्र आता है।
- यह प्रदेश भू-आकृतिक रूप से विविधता युक्त है।
- इस प्रदेश को प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा में छप्पन का मैदान नाम से जाना जाता है।
- इस मैदान में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ बनास, बाणगंगा, माही, सोम, जाखम व चम्बल आदि हैं।

कलम ACADEMY

11. Ans. 1

- ‘बूँदी पर्वत श्रेणी’ का सर्वोच्च शिखर है
- इनका सर्वोच्च शिखर सतूर 353 मीटर ऊँचा है, जो बूँदी नगर से 13 किमी. पश्चिम में है।

12. Ans. 3

- ढांड – मरुस्थलीय प्रदेश में अस्थायी झील
- इन्सेलबर्ग – अवशिष्ट पहाड़ियाँ
- **रेग – मिश्रित मरुस्थल**
- नेबखा – झाड़ियों के सहारे निर्मित बालुका-स्तूप

13. Ans. 2

- ‘मेवल’ है-
- डूँगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य पर्वतीय क्षेत्र

14. Ans. 1

- **महान सीमा भ्रंश (GBT)**- अरावली तथा दक्षिणी-पूर्वी पठार के मध्य। हाड़ौती पठारी प्रदेश के उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त पर स्थित भ्रंश। यह भ्रंश **धौलपुर, सवाईमाधोपुर, बूँदी, चित्तौड़गढ़ (बेंगू), उत्तरी कोटा** आदि जिलों में फैला हुआ है।

15. Ans. 2

- राजस्थान में स्थित पठारों के पूर्व से पश्चिम की ओर व्यवस्थित क्रम –
- **हाड़ौती, ऊपरमाल, लसाड़िया, भोराट, आबू**

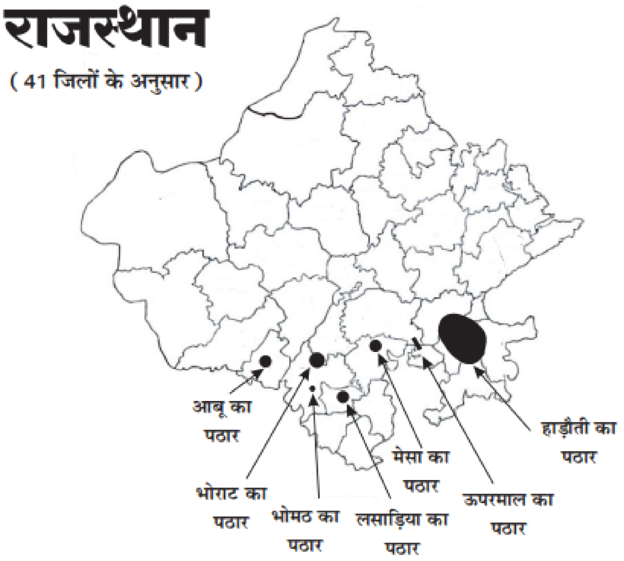

16. Ans. 4

- **हमादा मरुस्थलीय** प्रदेश की शैलें जुरासिक, क्रिटेशियस व इओसीन भूगर्भिक काल की मानी जाती हैं।

17. Ans. 4

दक्षिणी पूर्वी पठार को निम्नलिखित उपभागों में विभाजित किया गया है –

1. अर्द्धचन्द्राकार पर्वत श्रेणियाँ
2. नदी निर्मित मैदान
3. शाहबाद का उच्च स्थल
4. झालावाड़ा का पठार
5. डग-गंगधार के उच्च क्षेत्र

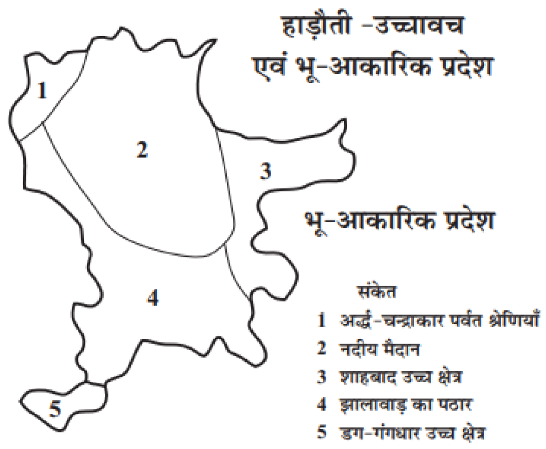

- देवगढ़ का पीडमाण्ट मैदान बनास बाणगंगा बेसिन के उपभाग मेवाड़ के मैदान का हिस्सा है।

18. Ans. 4

- **अवरोधी बालूका स्तूप**- किसी अवरोध के कारण (पेड़, झाड़ी, पर्वत, भवन) उत्पन्न जमाव से निर्मित। इन बालूका स्तूपों को जीवावशेष बालूक स्तूप माना जाता है। जैसे- पुष्कर, नाग पहाड़, बूढ़ा पुष्कर, बिचून पहाड़, जोबनेर एवं सीकर की पहाड़ियों में मिलते हैं।

19. Ans. 3

- **विन्ध्यन कगार**- ये **चूना पत्थर व बलुआ पत्थर** से निर्मित हैं, जिनका मुख बनास व चम्बल के बीच दक्षिण-पूर्व व पूर्व की ओर है।

20. Ans. 2

- डोरा पर्वत (869 मीटर) जालौर की पहाड़ियों के अन्तर्गत आता है।
- लूनी बेसिन-नेहड़- जालौर जिले के साँचौर में स्थित।
- शेखावाटी प्रदेश-जोहड़ जल संरक्षण तकनीक।
- घग्घर मैदान-नाली (गंगानगर, हनुमानगढ़)

21. Ans. 3

- डोरा पर्वत - जालौर
- कमली घाट - राजसमंद
- हर्ष की पहाड़ियाँ - सीकर
- हाथी नाल - उदयपुर

22. Ans. 3

- अरावली विश्व की **प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी** है, जिसमें **प्री कैम्ब्रियन** (प्री पेल्योजोइक) काल की चट्टानें पाई जाती हैं, मुख्य श्रेणी कठोर **क्वार्टजाइट** की बनी हुई हैं जो अपरदन के लिए काफी कठोर हैं।

23. Ans. 4

- **काली मिट्टी का निर्माण लावा के दरारी उद्गार (दक्कन ट्रैप)** से हुआ है, इसे मध्यम काली मृदा भी कहते हैं।
- **विस्तार क्षेत्र**- राजस्थान के **दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग** (कोटा, बूँदी, बारां व झालावाड़) में मिलती है।

24. Ans. 1

- **विस्तार**- राजसमन्द, पाली, उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, झालावाड़, जयपुर, दौसा, अलवर, सवाईमाधोपुर।

25. Ans. 3

- रेवेरिना – गंगानगर
- जिप्सीफेरस – बीकानेर
- **सी-रोजेम – श्रीगंगानगर**
- स्लेटी भूरी – जालौर, पाली

26. Ans. 3

- कैल्सी ब्राउन मृदा – जैसलमेर, बीकानेर
- नवीन भूरी मृदा – भीलवाड़ा, ब्यावर एवं अजमेर
- **पर्वतीय मृदा – उदयपुर, सलुम्बर एवं कोटा**
- लाल दुमट – डुंगरपुर, बांसवाड़ा

27. Ans. 2

मिट्टी के प्रकार	जलवायु प्रदेश
♦ एरिडोसोल्स	- शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क
♦ इनसेप्टीसोल्स	- अर्द्ध-शुष्क एवं आर्द्र
♦ अल्फीसोल्स	- उप-आर्द्र एवं आर्द्र
♦ वर्टीसोल्स	- आर्द्र एवं अति-आर्द्र

28. Ans. 4

मृदा	मृदा उपसमूह
एरिडोसोल	• कैम्बो ऑरथिड्स • केल्सी ऑरथिड्स • पेलि ऑरथिड्स • सेल ऑरथिड्स
एंटीसॉल	• सामेन्ट्स- टोरीसामेन्ट्स • फ्लूवेन्ट्स- टोरीफ्लूवेन्ट्स • उस्टीफ्लूवेन्ट्स
अल्फीसॉल	• हेप्लुस्तालफस
इन्सेप्टीसॉल	• उस्टोक्रेप्ट्स
वर्टीसॉल	• उस्टर्टस (पेल्युस्टर्टस, क्रोमस्टर्टस)

29. Ans. 4

- लवणीयता, सेम/जलाक्रान्ता की समस्या, क्षारीयता, मृदा अवकर्षण, मृदा अपरदन

30. Ans. 1

- **मरूस्थली मिट्टी (रेतीली मृदा)** पश्चिमी राजस्थान में शुष्क जलवायु वाले भागों में पाई जाती है।
- इस मिट्टी का निर्माण भौतिक अपक्षय व अधिक तापान्तर से हुआ है।
- यह मृदा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर विस्तृत है।
- यह मिट्टी कम उपजाऊ व लवणीय होती है।
- इस मृदा pH मान उच्च होता है तथा इसमें जैविक पदार्थों की कमी पाई जाती है।
- यह मिट्टी पवनों द्वारा स्थानान्तरित होती रहती है।
- इस मिट्टी के कणों का आकार अत्यधिक बड़ा होता है तथा इसकी जल धारण क्षमता कम व जल अवशोषण क्षमता अधिक होती है।

31. Ans. 2

- काली मृदा को रेगुर मृदा/स्वत: जुताई वाली मृदा के नाम से भी जाना जाता है। इसमें सूखने पर दरारे पड़ जाती हैं।

32. Ans. 1

- एरिडोसोल मृदा राज्य में सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र पर फैली हुई है।
- एरिडोसोल मृदा की पश्चिमी राजस्थान में प्रधानता है।
- एंटीसॉल राजस्थान में दूसरी सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई मृदा है।

33. Ans. 2

भूरी रेतीली कच्छारी मिट्टी

- यह मिट्टी राजस्थान के अलवर, भरतपुर के उत्तरी भाग और गंगानगर जिले के मध्य भाग में पाई जाती है।
- इस मिट्टी में बाजारा, ज्वार, तिल, ईसबगोल, गेहूँ, सरसों, जौ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है।
- इस मिट्टी का रंग लाल व भूरा होता है।
- इस मिट्टी में चूना, फॉस्फोरस व ह्यूमस की कमी होती है।

34. Ans. 1

- लाल-पीली मृदा में चीका व दोमट दोनों प्रकार की मृदा मिलती है।
- **विस्तार क्षेत्र**- सवाईमाधोपुर, सिरोही, राजसमन्द, पाली, अजमेर, उदयपुर व भीलवाड़ा के पश्चिमी भाग में पाई जाती है।

35. Ans. 1

- रेतीली और बलुई दोमट मृदा, राजस्थान के कितने भू-भाग पर विस्तृत लगभग दो तिहाई भाग पर है।

36. **(1)**

व्याख्या :

आत्मानुभूति प्रेरक (Self-Actualisation Motive) :

आत्मानुभूति/स्व-यथार्थीकरण आवश्यकताओं का उच्चतम स्तर है जो व्यक्ति के उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ति और वास्तविक पहचान से संबंधित है। मैस्लो के शब्दों में एक व्यक्ति जो हो सकता है उसे वही होना चाहिए। यह जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति है जो सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, आध्यात्मिक किसी भी रूप में हो सकती है।

37. **(2)**

व्याख्या :

चालना/अंतर्नोद (Drive) :

अंतर्नोद/प्रणोद तनाव अथवा क्रियाशीलता की अवस्था को कहा जाता है जो किसी आवश्यकता द्वारा उत्पन्न होता है। अर्थात् आवश्यकता अंतर्नोद को जन्म देती है। प्रेरक में दो चीजों का समावेश होता है- बल या अंतर्नोद और व्यवहार की लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने की प्रवृत्ति।

जब प्रणोद के फलस्वरूप व्यक्ति का व्यवहार लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होता है तो ऐसे व्यवहार को प्रेरित व्यवहार कहते हैं।

38. **(2)**

व्याख्या :

- प्रेरणा छात्र की रूचि को बढ़ाती है किन्तु अवधान निर्माण में सहयोगी है।

39. **(4)**

व्याख्या :

प्रत्याशा सिद्धांत (Expectancy Theory)-

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1964 में येल प्रबंधन विश्वविद्यालय के विक्टर व्रूम ने किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार किसी अभिप्रेरित व्यवहार की तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे परिणामस्वरूप क्या प्राप्त होगा(outcome reward)।

40. **(3)**

व्याख्या :

- **वुडवर्थ :** निष्पत्ति = योग्यता + अभिप्रेरणा

41. **(1)**

व्याख्या :

स्किनरः-

- शिक्षा-मनोविज्ञान का आरम्भ अरस्तू के समय से माना जा सकता है पर शिक्षा-मनोविज्ञान के विज्ञान की उत्पत्ति यूरोप में पेस्टॉलॉजी, हरबार्ट और फ्रॉबेल के कार्यो से हुई, जिन्होंने शिक्षा का मनोवैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया।

42. **(4)**

व्याख्या :

- **सैन्ट्रोक** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखलाता है।''

43. **(3)**

व्याख्या :

व्यवहारवाद (Behaviourism)-

- प्रवर्तक – जे.बी. वॉटसन
- मनोविज्ञान की विषयवस्तु प्रेक्षणीय व्यवहार का अध्ययन हैं।
- मनोविज्ञान वस्तुनिष्ठ व प्रयोगात्मक विज्ञान हैं।
- प्रेक्षण, अनुबंधन, परीक्षण, शाब्दिक रिपोर्ट

44. **(4)**

व्याख्या :

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की अनुप्रयुक्त शाखा हैं।
- यह शैक्षिक समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रयोग करके करता हैं।
- यह एक वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक विज्ञान हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान एक नियामक विज्ञान नहीं हैं।

45. **(3)**

व्याख्या :

आंतरिक अभिप्रेरण	बाह्य अभिप्रेरण
1. इसका स्रोत मनुष्य के भीतर होता है।	1. इसका स्रोत कोई बाहरी तत्व होता है।
2. ऐसे अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप से बाहर से देखा नहीं जा सकता।	2. ऐसे अभिप्रेरण को बाहर से देखा जा सकता है।
3. यह व्यक्ति को कार्य केन्द्रित रखता है।	3. यह व्यक्ति को लक्ष्य केन्द्रित रखता है।
4. उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर आंतरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण हैं।	4. पुरस्कार, दण्ड, धन, दोषारोपण, प्रतिद्वन्दिता, परिणाम का ज्ञान, प्रशंसा आदि बाह्य अभिप्रेरण के उदाहरण है।

46. **(2)**

व्याख्या :

लक्षण –

(i) भाषायी विकास में देरी

(ii) नये शब्दों को सीखने में कठिनाई

(iii) ब्लैकबोर्ड से नोटबुक में कॉपी करने में कठिनाई

(iv) इसका असर बालक के पढ़ने लिखने और स्पैलिंग बोलने की क्षमता पर भी पड़ता है।

47. **(4)**

व्याख्या :

डिसग्राफिया :

यह बालक की लेखन संबंधित निर्योग्यता है जिसमें उसे लिखने मे कठिनाई होती है। (Writing Difficulty)

डिसकैल्कुलिया :

वह अधिगम निर्योग्यता जहाँ बालक को गणित को समझने में कठिनाई हो। (Mathematics/Calculation Difficulty)

डिसप्रेक्सिया :

यह एक ऐसी निर्योग्यता है जहाँ बालक के माँस पेशियों के बीच में समन्वय का अभाव हो।

डिसलेक्सिया :

यह एक तरह की अधिगम निर्योग्यता है जिसके अंतर्गत बालक को पढ़ने में कठिनाई होती है। (Reading Difficulty)

48. **(3)**

49. **(3)**

व्याख्या :

- वकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 (RPwD Act 2016) के अनुसार, Learning Disability को **मान्यता प्राप्त विकलांगता** माना गया है।

50. **(3)**

व्याख्या :

- डिस्लेक्सिक बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त शिक्षण विधि **श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री और multisensory technique** का प्रयोग होती है।

51. **(1)**

व्याख्या :

प्रभाविता का नियम (Law of Dominance):

- इस नियम के अनुसार माता-पिता में जो गुण प्रभावी होगा वह अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होगा।

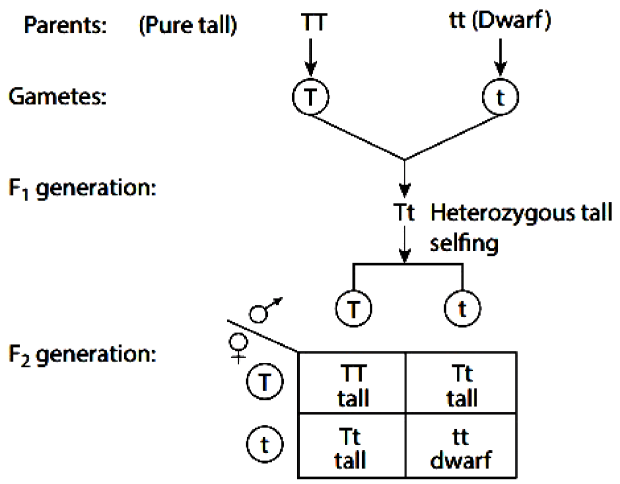

52. **(2)**

व्याख्या :

पृथक्करण का नियम (Law of Segregation):

- इस नियम के अनुसार सुप्त गुण अपना प्रभाव नहीं खोते। हो सकता है कि आगे की पीढ़ियों में ये गुण प्रभावी हो जाये तो स्वाभाविक है कि वे गुण नजर आने लग जाये।

53. **(1)**

व्याख्या :

- **जेम्स ड्रेवर :** माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम है।

54. **(2)**

व्याख्या :

विभिन्नता का नियम (Law of Variation):

- इस नियम के अनुसार बालक अपने माता-पिता के बिल्कुल समान न होकर कुछ अलग होता है।
- इस प्रकार एक माता-पिता के बालक दूसरे से समानता रखते हुए भी बुद्धि, रंग और स्वभाव में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।
- भिन्नता के मुख्य कारण उत्परिवर्तन (Mutations) तथा प्राकृतिक चयन (Natural Selection) होते हैं, जिनके द्वारा वंशक्रमीय विशेषताओं का उन्नयन होता है।

55. **(2)**

व्याख्या :

- मानव जीवन का आरंभ केवल एक कोष युग्मनज (Zygote) से घटित होता है।
- कोश में केन्द्र व कोशारस (Cytoplasm) पाये जाते हैं। केन्द्र में वंशसूत्र होते हैं।
- मादा की जनक कोशिका अण्डाणु (Ovum) जब पिता की जनक कोशिका शुक्राणु (Sperm) से निषेचित होने के परिणामस्वरूप युग्मनज (Zygote) का निर्माण होता है।
- यह युग्मनज केन्द्रक युक्त एक छोटी कोशिका होती है, जिसके मध्य में केन्द्रक होता है, जिसमें गुणसूत्र होते है।
- संयुक्त कोश/युग्मनज में वंशसूत्र के 23 जोड़े होते हैं।
- जनन कोशिका में 23 वंशसूत्र ही होते हैं। पुरुष के शुक्राणु व स्त्री के अण्डाणु मिलकर सन्तान में 23 जोड़े वंशसूत्र का निर्माण करते हैं।
- 22 जोड़े पुरुष व स्त्री में समान होते हैं किन्तु 23वाँ जोड़ा अलग होता है। यही लिंग का निर्धारण करता है।

56. **(1)**

व्याख्या :

शिक्षा मनोवैज्ञानिक अर्थ एवं प्रकृति-

- यह शैक्षिक समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रयोग करके करता हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इस विषय का प्रयोग व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार के अध्ययन और विश्लेषण करने में किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान विभिन्न मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान संकलित किये गये ज्ञान को सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान करता हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान ने एक सिद्धान्त का विकास किया है, जिससे ज्ञान की खोज की जाती है, परिकल्पनाओं का परीक्षण होता है तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता हैं।
- यह पद्धति अपने आप उत्पन्न होने वाली शैक्षिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में सहायक होती हैं।
- ये सूचनाएँ, ज्ञान, सिद्धान्त और पद्धति सभी मिलकर शिक्षा-मनोविज्ञान का विषय बनते हैं और शैक्षिक सिद्धान्त तथा शैक्षिक व्यवहार को आधार प्रदान करते हैं।

57. **(1)**

व्याख्या :

स्वलीनता (Autism) :

- यह एक विकासात्मक विकार है जो व्यक्ति के संप्रेषण कौशल पर असर डालते हैं कि व्यक्ति समाज में कैसे पेश आता है। (सामाजिक व्यवहार व संपर्क) यह व्यक्ति के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक, शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

लक्षण :

(i) दोहराव युक्त व्यवहार (Repetative Behaviour)
(ii) बातचीत में असमर्थता
(iii) सीमित शौक
(iv) संप्रेषण की कमजोरी
(v) सामाजिकता का अभाव
(vi) अत्यधिक प्रकाश एवं ध्वनि के प्रति संवेदनशील

58. **(1)**

व्याख्या :

- **डेविड मैक्लीलैंड** ने इसकी अभिव्यक्ति में चार सामान्य तरीके बताए हैं –
  1. बाहरी स्रोत का उपयोग करना
  2. भीतरी स्रोत का निर्माण करना
  3. व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करना
  4. संगठन के सदस्य के रूप में दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए कार्य करना।
- एक व्यक्ति शक्ति या सामर्थ्य का बोध प्राप्त करने के लिए खेल सितारों की कहानी पढ़ता हैं, अथवा किसी लोकप्रिय व्यक्ति के साथ संलग्न होता है। शक्ति अभिप्रेरक अभिव्यक्ति हेतु मैक्लीलैण्ड के अनुसार यह बाहरी स्रोत की विधि है।

59. **(4)**

व्याख्या :

- अध्यापक को शिक्षण विधियों तथा सामग्रियों के उचित चयन का ज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा होता है जिससे वह शिक्षण की उचित व्यवस्था कर सकें।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों का, अधिगम की क्रिया के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करता है।
- बालक में होने वाले व्यावहारिक परिवर्तन का मूल्यांकन करने में शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को सहायता प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को बालक की प्रकृति, स्वभाव तथा आवश्यकताओं आदि का ज्ञान प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षा के उद्देश्यों को समझने में सहायता करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को वह ज्ञान प्रदान करता है, जिससे वह बालक की समस्याओं का पता लगा सके और उसका हल भी बता सके।

60. **(3)**

व्याख्या :

- कोई भी अभिप्रेरक पूर्णत: जैविक अथवा मनो-सामाजिक नहीं होता। यह व्यक्ति में विभिन्न मिश्रणों में उद्दीप्त होते हैं।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिप्रेरकों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है – जैविक एवं मनो-सामाजिक।

61. **Ans. 2**

- अरावली ग्रीन वाल परियोजना देश के चार राज्यों के 29 जिलों में 700 किमी. लम्बाई में विस्तृत (सर्वाधिक 81 प्रतिशत विस्तार राजस्थान में है) अरावली के आस-पास के 5 किमी. बफर क्षेत्र में वनों से पुन: भरने हेतु चलाई जा रही है।
- इस परियोजना का विस्तार राजस्थान के 19 जिलों (उदयपुर, सिरोही, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, झुन्झुनूं, अलवर, जयपुर, अजमेर, पाली, नागौर, सीकर, दौसा, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, राजसमंद) में है। (सर्वाधिक विस्तार उदयपुर तथा सबसे कम विस्तार भरतपुर में)

62. **Ans. 3**

- 4 जून, 2025 को राजस्थान के दो स्थलों **मेनार** व **खींचन** को अन्तरराष्ट्रीय रामसर साइट्स की सूची में सम्मिलित किया गया।
- **मेनार:-**
  - ◆ मेनार व खेरोदा, उदयपुर (राजस्थान) स्थित एक मीठे पानी का मानसूनी वेटलैण्ड कॉम्पलेक्स है जो तीन तालाबों ब्रह्मा तालाब, ढांड तालाब व खोरोदा तालाब तथा दो अन्य तालाबों को जोड़ने वाली कृषि भूमि से मिलकर बना है।

कलाम ACADEMY

- इस साइट का कुल क्षेत्रफल 463.4 हैक्टेयर है। (रामसर साइट क्रमांक = 2567)
- **मेनार को 'बर्ड विलेज' के नाम से भी जाना जाता है।** यहाँ मानसूनी मौसम के दौरान कृषि भूमि में पानी भर जाता है, जिसके कारण यहाँ लगभग 110 प्रजातियों के जल पक्षियों का आगमन होता है। (67 प्रवासी प्रजाति)

63. **Ans. 3**

- युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय व खेलो इण्डिया द्वारा 'खेलो इण्डिया युनिवर्सिटी गेम्स' के **5वें** संस्करण की मेजबानी राजस्थान को सौंपी गई है।
- इन खेलों की मेजबानी राजस्थान को पहली बार सौंपी गई हैं।
- ये खेल नवम्बर-2025 में पूर्णिमा विश्वविद्यालय (मेजबान) और राजस्थान विश्वविद्यालय (सह-मेजबान) द्वारा संयुक्त रूप से जयपुर में आयोजित किए जायेंगे।

64. **Ans. 2**

- राजस्थानी भाषा के लिए **वर्ष 2025** का **बाल साहित्य पुरस्कार भोगीलाल पाटीदार** को उनकी पुस्तक ''पखेरूवन नी पीरा (नाटक)'' के लिए प्रदान किया गया।

  पुरस्कार:- विशेष बॉक्स में ताम्र पत्रिका व 50 हजार रूपये की राशि
- वर्ष 2025 के राजस्थानी भाषा के बाल साहित्य पुरस्कार के चयन हेतु गठित जूरी में निम्न तीन सदस्य थे-

  (1) प्रो. कल्याण सिंह शेखावत

  (2) डॉ. नवज्योत भनोट

  (3) श्रीमति दमयन्ती जादावत

65. **Ans. 2**

- 28 मई से 6 जून तक चांगवोन (दक्षिण कोरिया) में आयोजित वर्ल्ड शूटिंग पैरा स्पोर्ट्स (WSPS) वर्ल्ड कप-2025 में **रूद्रांश खण्डेलवाल** ने P1-मेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (SH1) की **व्यक्तिगत स्पर्द्धा** में मनीष नरवाल को हराकर स्वर्ण पदक जीता। इस हेतु इनका **स्कोर 236.3** अंक रहा।

66. **Ans. 1**

- केन्द्र सरकार ने गजट नॉटिफिकेशन जारी किया है जिसके तहत पान मैथी (नागौरी पान मैथी) को जून-2025 में स्पाइसेस बोर्ड भारत (भारतीय मसाला बोर्ड) ने आधिकारिक रूप से 53वें मसाले के रूप में अधिसूचित किया है।

67. Ans. 2

- ICAR के कृषि एप्लीकेशन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के अन्तर्गत 66 कृषि विज्ञान केन्द्र है जिनमें 1 दिल्ली में, 18 हरियाणा में तथा 47 राजस्थान में है। ये विभिन्न संस्थाओं के प्रशासनिक नियंत्रण में है जिनमें से कुछ NGO के नियंत्रण में है जैसे-
- संगरिया हनुमानगढ़ - ग्रामोत्थान विद्यापीठ
- सरदारशहर, चुरू - गांधी विद्या मंदिर
- बड़गाँव, उदयपुर - विद्याभवन सोसाइटी
- वनस्थली विद्यापीठ, टोंक - वनस्थली विद्यापीठ

68. Ans. 3

- राज्य में 9 पशुधन अनुसंधान स्टेशन है जो कि निम्न है-
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, नोहर (हनुमानगढ़)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बीछवाल (बीकानेर)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बीकानेर
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, कोडमदेसर (बीकानेर)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, चाँदन (जैसलमेर)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, वल्लभनगर (उदयपुर)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, डग (झालावाड़)
- पशुधन अनुसंधान स्टेशन, सरमथुरा (धौलपुर)

नोट- केशवाना, जालौर में कृषि अनुसंधान स्टेशन है।

कलाम ACADEMY

69. Ans. 3

♦ राज्य में स्थित कृषि अनुसंधान स्टेशन व उनसे संबंधित कृषि जलवायु प्रदेश निम्न है-

अनुसंधान स्टेशन	**संबंधित कृषि जलवायु प्रदेश**
• मंडोर (जोधपुर)	1A
• गंगानगर	IB
• बीकानेर	1C
• फतेहपुर (सीकर)	IIA
• केशवाना (जालौर)	IIB
• दुर्गापुरा (जयपुर)	IIIA
• नवगाँव (अलवर)	IIIB
• उदयपुर	IVA
• उम्मेदगंज, कोटा	V

इस प्रकार नवगाँव, अलवर का कृषि अनुसंधान स्टेशन IIIB कृषि जलवायु प्रदेश से संबंधित है।

70. Ans. 2

♦ **वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR)** की एक घटक प्रयोगशाला सीरी, पिलानी की स्थापना वर्ष 1950 में हुई जब CSIR के प्रणेता डॉ. शांति स्वरूप भटनागर ने इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान को समर्पित अनुसंधान और विकास संस्थान की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता के लिए जी.डी. बिड़ला से संपर्क किया।

♦ **21 सितंबर 1953** में जवाहरलाल नेहरू द्वारा पिलानी (झुन्झुनूँ) में इसकी आधारशिला रखी।

71. Ans. 3

♦ शुष्क क्षेत्र में बागवानी फसलों की क्षमता को साकार करने और लोगों के लिए पोषण और आय सुरक्षा को प्राप्त करने की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के कृषि अनुसंधान और शिक्षा पर कार्य समूह की सिफारिश पर भारतीय योजना आयोग के अनुमोदन के बाद सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र (NRCAH) की स्थापना की गई थी।

♦ **27 सितंबर 2000** से इसे संस्थान का दर्जा दिया गया और इसका नाम केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर रखा गया।

72. Ans. 2

• **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के द्वारा केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान की स्थापना **1962 में मालपुरा (टोंक)** में की गई जो कि अब अविकानगर के नाम से लोकप्रिय है।

73. Ans. 2

♦ केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का एक घटक है जोकि जोधपुर में स्थित है।

♦ इस संस्थान की स्थापना 1952 में रेत की टीलों के स्थिरीकरण और आश्रय पट्टियों की स्थापना के माध्यम से वायु अपरदन के खतरों को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान कार्य हेतु **मरुस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र (DARS)** के रूप में हुई।

♦ 1966 में इस संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कर दिया गया।

♦ यह देश का एकमात्र ऐसा संस्थान है जिसे शुष्क क्षेत्र पारिस्थितिकी तंत्र के मुद्दों पर विशेष रूप से अनुसंधान करने का अधिकार है।

♦ इस प्रकार प्रश्न में असत्य कथन केवल B है क्योंकि केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान की **1952** में मरूस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र के रूप में स्थापना की गई।

74. Ans. 3

♦ ICAR के अधीन राजस्थान में 3 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित है जो निम्नानुसार है-

♦ अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ-

(i) मोती बाजरा पर जोधपुर में

(ii) सरसों व राई पर भरतपुर में

(iii) शुष्क क्षेत्र फलों पर बीकानेर में

75. Ans. 3

♦ केन्द्रीय कृषि फार्म जैतसर, श्रीगंगानगर की स्थापना 1962 में कनाड़ा के सहयोग से की गई। जबकि केन्द्रीय राज्य फार्म/ केन्द्रीय कृषि फार्म, सुरतगढ़ की स्थापना 1956 में रूस के सहयोग से की गई जो कि एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म है।

76. Ans. 4

♦ चौपासनी जोधपुर में राजस्थानी शोध संस्थान है जिसकी स्थापना 1955 में हुई तथा-

♦ सामाजिक कार्य शोध केन्द्र - तिलोनिया, अजमेर

♦ रूपायन शोध संस्थान - बोरून्दा, जोधपुर

♦ हस्तशिल्प डिजाइन विकास एवं शोध केन्द्र - जयपुर में है।

कलाम ACADEMY

77. Ans. 4

- केन्द्रीय पशुधन/मवेशी प्रजनन फार्म, सुरतगढ़, श्रीगंगानगर की स्थापना 1967 में हुई जो कि थारपारकर नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।
- जबकि केन्द्रीय झुंड पंजीकरण युनिट, अजमेर गिर व मुर्रा नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।

78. Ans. 1

- यांत्रिक कृषि फार्म, कोटा की स्थापना 6 जून, 1978 को हुई।

79. Ans. 1

प्रश्न में अनुसंधान केन्द्र व संबंधित स्थानों की दो सूचियों का मिलान करवाया गया है जो निम्नानुसार है-

- शुष्क वन अनुसंधान केन्द्र - जोधपुर
- आयुर्वेद केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान - जयपुर
- राज्य भेड रोग अनुसंधान प्रयोगशाला - जोधपुर
- सिरेमिक विद्युत अनुसंधान एवं विकास केन्द्र - बीकानेर

इस प्रकार प्रश्न में दिए गए स्थानों में से जोधपुर में 2 संस्थान थे जबकि चौथे विकल्प टोंक में प्रश्न में दिया गया कोई भी संस्थान नहीं है। टोंक में निम्न संस्थान है-

1. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
2. पश्चिमी क्षेत्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र, अविकानगर
3. मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान
4. भारतीय घास भूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान झाँसी का पश्चिमी क्षेत्र अनुसंधान केन्द्र अविकानगर

80. Ans. 2

- राजस्थान का राज्य खेल बास्केटबॉल है जिसे 1948 में राज्य खेल का दर्जा प्राप्त हुआ।

81. Ans. 3

- प्रश्न में राज्य प्रतीक तथा उनको अधिसूचित करने की दिनाँक की दो सूचियों का मिलान करवाया गया है जिनका सही मिलान निम्नानुसार है-

(A) पशु (पशुधन श्रेणी)	- ऊँट	- 19 सितंबर, 2014
(B) वृक्ष	- खेजडी	- 31 अक्टूबर, 1983
(C) फूल	- रोहिड़ा का फूल	- 31 अक्टूबर, 1983
(D) पशु (वन्यजीव श्रेणी)	- चिंकारा	- 12 दिसंबर, 1983

इस प्रकार राज्य वृक्ष व राज्य फूल को अधिसूचित करने की दिनाँक समान है जबकि प्रश्न में दी गई एक अन्य दिनाँक 21 मई 1982 को ग्रेट इंडियन बस्टर्ड/गोड़ावन को अधिसूचित किया गया था।

82. Ans. 2

राज्य प्रतीक व उनके वैज्ञानिक नाम निम्नानुसार है-

♦ राज्य पक्षी (गोड़ावन)	- ओर्डियोटिस नाइग्रीसैप्स/कोरियटस नाइग्रीसैटस
♦ राज्य वृक्ष (खेजड़ी)	- प्रोसेपिस सिनेरिया
♦ राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी-चिंकारा)	- गजेला बन्नेट्टी/गजेला-गजेला
♦ राज्य पशु (पशुधन श्रेणी - ऊँट)	- केमेलस डोमेडेरियस
♦ राज्य पुष्प (रोहिडा का फूल)	- टिकोमेला अनड्यूलेटा

83. Ans. 3

- चिंकारा का वैज्ञानिक नाम गजेला बन्नेट्टी है जबकि इसकी भारतीय प्रजाति को गजेला गजेला नाम दिया गया है। यह मुख्यत: पश्चिमी राजस्थान/मरु क्षेत्र में पाया जाता है तथा राज्य में चिंकारा प्रजनन केन्द्र नाहरगढ़ अभयारण्य, जयपुर में है।
- इस प्रकार प्रश्न में दिए गए कथनों में से केवल C कथन ही सत्य है।

84. Ans. 4

- राज्य पक्षी गोड़ावन/ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को 21 मई 1982 की अधिसूचना के माध्यम से राज्य पक्षी के रूप में अधिसूचित किया गया तथा इसी अधिसूचना में इसे वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के उपबंधों के अधीन पूर्णत: संरक्षित घोषित किया गया।
- इस प्रकार प्रश्न में दिए गए दोनों कथन सत्य है जबकि प्रश्न में असत्य कथनों का विवरण पूछा गया है। अत: विकल्प 4 (न तो A न ही B) उत्तर होगा

85. Ans. 1

- राज्य में स्थित 47 कृषि विज्ञान केन्द्रों में से 3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों के प्रशासनिक नियंत्रण में है इनमें से
- जोधपुर व पाली - काजरी के नियंत्रण में तथा बानसुर, अलवर राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय, सेवर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं।
- जबकि प्रश्न में दिए गए अन्य विकल्प कुम्हेर, भरतपुर; खेड़ला, खुर्द, दौसा व अरणिया, श्रीमाधोपुर (सीकर) श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं।

कलाम ACADEMY

86. Ans. 2

♦ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थानी भाषा का पहला वैज्ञानिक विभाजन प्रस्तुत किया तथा राजस्थानी भाषा के लिए सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द का प्रयोग किया।

87. Ans. 4

♦ गौड़वाड़ी बोली मुख्यतया जालौर व सिरोही के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है।

88. Ans. 2

♦ वागड़ी बोली वागड़ क्षेत्र (डूंगरपुर-बांसवाड़ा)में बोली जाती है।

♦ हाड़ौती बोली मुख्यतया कोटा, बारां, बूंदी तथा झालावाड़ में बोली जाती है।

♦ मालवी बोली मालवा प्रदेश से जुड़े राजस्थान के क्षेत्रों झालावाड़, कोटा व प्रतापगढ़ के कुछ भाग में बोली जाती है।

89. Ans. 1

♦ **रांगड़ी बोली** – ये बोली मालवा के राजपूतों में प्रचलित थी तथा अपनी कर्कशता के लिये जानी जाती है जो कि मालवी की एक उपबोली है।

90. Ans. 2

♦ पूर्वी राजस्थानी अर्थात् ढूंढाड़ी के उपबोलियों में चौरासी, अजमेरी, किशनगढ़ी, नागरचोल, काठेड़ी, राजावाटी, सिपाड़ी आदि प्रमुख है।

91. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- चूंकि पृथ्वी 23½° झुकी हुई है। इसलिए सूर्य की सीधी किरणें दोनों गोलार्द्धों में 23½° अक्षांशों तक पड़ती है।
- **ग्रीष्म/ उत्तरी अयनांत :- 21 जून** को उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की तरफ झुका होने के कारण कर्क रेखा (23½° उत्तरी अक्षांश) पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती है।
- **शीत/ दक्षिणी अयनांत :- 22 दिसम्बर** को दक्षिणी ध्रुव के सूर्य की ओर झुके होने के कारण मकर रेखा (23½° दक्षिणी अक्षांश) पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती है।
- **परंतु यदि पृथ्वी का अक्ष झुका हुआ नहीं होता तो सूर्य की किरणें केवल भूमध्य रेखा/ विषुवत रेखा पर ही लम्बवत् पड़ेंगी।**

92. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- पृथ्वी की **परिक्रमण गति एवं अक्षीय झुकाव** के कारण पृथ्वी पर **ऋतुएँ बनने एवं दिन-रात के छोटे-बड़े** होने की क्रिया होती है तथा **वायुदाब पेटियों (हवाओं की पेटियों)** में भी खिसकाव होता है। यदि पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी नहीं होती एवं केवल परिक्रमण गति ही होती तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर हमेशा दिन-रात बराबर होते (12 घण्टे का दिन और 12 घण्टे की रात) एवं ऋतुएँ भी नहीं बनती।

93. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **शीत/दक्षिणी अयनांत :- 22 दिसम्बर** को दक्षिणी ध्रुव के सूर्य की ओर झुके होने के कारण मकर रेखा (23½° दक्षिणी अक्षांश) पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती है, इसे *दक्षिणी अयनांत* कहते हैं।
- **शीत अयनांत (Winter solstice) के दौरान दक्षिणी ध्रुव (90° दक्षिणी अक्षांश) पर सूर्य की किरणें 23°30' के कोण पर पड़ती है।**

94. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **दिन रात** का बनना भी **पृथ्वी की घूर्णन गति** के कारण होता है।

95. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **पृथ्वी की घूर्णन या परिभ्रमण गति भूमध्य रेखा पर सर्वाधिक 1600 कि.मी.** प्रति घंटा, 45° अक्षांशों पर 1120 कि.मी. प्रति घंटा तथा ध्रुवों पर लगभग शून्य हो जाती है।

96. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- कोरिओलिस बल पृथ्वी की घूर्णन गति के कारण गतिशील वस्तुओं पर लगने वाला एक आभासी बल है।
- यह बल अक्षांश की ज्या के समानुपाती होता है।
- **कोरिओलिस बल का मान ध्रुवों पर अधिकतम व विषुवत् रेखा / भूमध्य रेखा पर शून्य (न्यूनतम) होता है।**

97. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है जिसे **दैनिक घूर्णन या परिभ्रमण गति (Rotation) कहा जाता है इस गति के कारण दिन व रात बनते हैं। यह गति पश्चिम से पूर्व दिशा में होती है** जिसके कारण सूर्य पूर्व में उदय होता है एवं पश्चिम में अस्त होता है।
- पृथ्वी की इस गति के कारण भूमध्य रेखीय क्षेत्र में अधिक 'उभार' एवं ध्रुवों पर चपटापन पैदा हुआ है।
- इस गति के कारण हवाओं और धाराओं की दिशा में भी बदलाव आता है।

98. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- 40^0 उत्तरी अक्षांश का प्रतिध्रुवस्थ **40^0 दक्षिण अक्षांश** होता है।
- 140^0 पूर्वी देशांतर का प्रतिध्रुवस्थ $180^0 - 140^0 =$ **40^0 पश्चिम देशांतर** होता है।

99. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- पृथ्वी व सूर्य के मध्य **न्यूनतम दूरी** की स्थिति **उपसौर** (14.7 करोड़ किमी.) कहलाती है जो **3 जनवरी** को होती है।

100. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- पृथ्वी व सूर्य के मध्य **अधिकतम दूरी** की स्थिति **अपसौर** (15.2 करोड़ किमी.) कहलाती है जो **4 जुलाई** को होती है।

101. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- विषुव की स्थिति में जब सूर्य भूमध्य रेखा पर सीधा चमकता है तो **प्रदीप्त वृत्त अक्षांशों को समान रूप से प्रतिच्छेदित करता है** जिससे दिन व रात की अवधि समान होती है।
- पृथ्वी की घूर्णन गति के कारण अपकेन्द्रीय बल लगता है।
- दिन-रात को विभाजित करने वाला वृत्त प्रदीपन वृत्त कहलाता है।
- पृथ्वी की परिक्रमण कक्षा दीर्घवृत्ताकार है।

102. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा को **पश्चिम से पूर्व** की ओर यात्रा करते हुए पार करने पर तिथि को **एक दिन पिछे** व **पूर्व से पश्चिम** की ओर से यात्रा करते हुए पार करने पर तिथि को **1 दिन आगे** किया जाता है।

103. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- ग्रीनवीच रेखा को मानक यामयोत्तर कहा जाता है।
- ग्लोब पर अक्षांश व देशान्तरों से निर्मित वृहद वृत्तों की कुल संख्या 181 है।
- **सभी अक्षांश रेखाएँ विषुवत वृत्त (भूमध्य रेखा) के समानांतर होती है, लम्बवत् नहीं।**
- **देशांतर रेखाएँ विषुवत् वृत्त सहित सभी अक्षांश वृत्तों को समकोण पर (लम्बवत्) पर काटते हैं।**

104. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- देशान्तरों का आकार अर्द्धवृत्ताकार होता है।
- सभी देशान्तरीय याम्योत्तरों की लम्बाई समान होती है।
- ग्रीनविच रेखा यूरोप व अफ्रीका महाद्वीप से गुजरती है।
- **भूमध्य रेखा पर देशान्तर रेखाओं के बीच की दूरी 111 कि.मी. (सर्वाधिक) होती है जो ध्रुवों की ओर चलने पर कम होती जाती है। ध्रुवों पर इनके मध्य की दूरी शून्य हो जाती है। ध्रुवों पर सभी देशान्तर रेखाएँ आपस में मिल जाती हैं।**

105. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **विषुवत रेखा/विषुवत वृत :** दोनों ध्रुवों से समान दूरी पर स्थित पृथ्वी को दो समान भागों उत्तरी व दक्षिणी गोलार्द्ध में विभक्त करने वाली रेखा को **विषुवत रेखा/ भूमध्य रेखा (0^o अक्षांश)** कहा जाता है। अक्षांशों को अंश में मापा जाता है, विषुवत वृत्त शून्य अंश अक्षांश को दर्शाता है।

106. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- रूस में 11 मानक समयों को अपनाया गया है।
- प्रत्येक समय क्षेत्र 15^o देशान्तर तक के क्षेत्र को घेरता है।
- देशान्तरों की कुल संख्या 360 है।
- भारत में इलाहाबाद के निकट नैनी से गुजरने वाली **$82\frac{1}{2}^o$ पूर्वी देशान्तर रेखा को प्रामाणिक समय रेखा/ मानक याम्योत्तर माना गया है।**

कलम ACADEMY

107. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **प्रधान मध्याह्न रेखा व अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा :** वर्ष 1884 में लंदन के ग्रीनिच (जहाँ ब्रिटिश राज के वेद्यशाला स्थित है) से गुजरने वाली देशान्तर रेखा को 0° **देशान्तर रेखा/प्रधान मध्याह्न रेखा/प्रमुख याम्योत्तर** माना गया। इसके पूर्व एवं पश्चिम में 180°-180° देशान्तर बनाये गये हैं।

108. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- 105^0N अक्षांश संभव नहीं है क्योंकि अधिकतम अक्षांशीय मान 90^0N या 90^0S ही होता है।
- 181^0E देशांतर संभव नहीं है क्योंकि देशांतर 180^0E व 180^0W ही संभव है।
- 0^0 प्रधान मध्यान्ह रेखा है, अत: 0^0E या 0^0W संभव नहीं है।
- **अत: उपरोक्त विकल्पों में से 75^0N अक्षांश व 91^0W देशांतर सही अक्षांशीय व देशांतरीय स्थिति को दर्शाता है क्योंकि अक्षांशों का मान 0^0 से 90^0N/S तथा देशांतरों का मान 0^0 से 180^0E/W हो सकता है।**

109. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- समय का अंतर = 5 घंटे (11:00AM - 6:00 AM)

  पृथ्वी 24 घंटे में घूमती है = 360^0

  अत: 1 घंटे में पृथ्वी घूमेगी = $\frac{360}{24} = 15^0$

  अत: 5 घंटे में पृथ्वी घूमेगी = $15^0 \times 5 = 75^0$ **देशांतर**

  चूंकि समय ग्रीनविच से आगे है (सुबह 6 बजे से सुबह 11 बजे) अत: **देशांतर पूर्व** में होगा।

  अत: 75° पूर्व देशांतर सही उत्तर होगा।

110. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- भूमध्य रेखा सबसे लम्बी अक्षांश रेखा होती है तथा **ध्रुवों की ओर जाने पर अक्षांश रेखाओं की परिधि घटती जाती है।**
- केवल भूमध्य रेखा ही ग्लोब को दो बराबर भागों में बांटती है।
- **केवल भूमध्य रेखा का काल्पनिक समतल तल भू-केन्द्र से गुजरता है।** अन्य सभी अक्षांशों के काल्पनिक समतल तल भू-केन्द्र से नहीं गुजरते हैं।
- सभी अक्षांश रेखाएँ लगभग समदूरस्थ होती हैं।

111. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- कच्छ में खादीर बेत के किनारे मन्सर तथा मन्हर बरसाती पानी नाले के निकट धौलावीरा की खोज डॉ. जगपति जोशी तथा उत्खनन रविन्द्र सिंह बिष्ट द्वारा 1990 में की गई।
- धौलावीरा से **उत्कृष्ट जल प्रबंधन** व वाटर हार्वेस्टिंग के प्रमाण मिले है।
- धौलावीरा एकमात्र हड़प्पा स्थल है जिसका **नगर तीन भागों** (गढ़ी, मध्यम व निचला नगर) में बंटा हुआ था तथा प्रत्येक भाग के चारों ओर दीवार बनाई गयी थी।

112. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **मोहनजोदड़ो** सिंधु नदी के दांये (पूर्वी किनारे)किनारे स्थित हड़प्पा सभ्यता का एक महत्वपूर्ण स्थल है। इसकी खोज 1922 ई. में **राखल दास बनर्जी** द्वारा की गई थी।
- सिंधु सभ्यता का यह सबसे बड़ा और प्रमुख नगर था।
- मोहनजोदड़ो से डेडमैन लेन के साक्ष्य मिले हैं। यह एक सकड़ी गली है जहाँ से कई शव एक साथ प्राप्त हुए है।

113. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- सिंध सभ्यता के कई नगर सिंधु नदी के किनारे स्थित थे किन्तु कई ऐसे भी नगर थे जो अन्य किसी नदी के किनारे पाऐ गए है (जैसे-धोलावीरा, लोथल आदि)।
- सैंधव नगरों की योजना ग्रिड-विन्यास पर आधारित थी। यद्यपि सिंधु घाटी सभ्यता के ज्यादातर नगर दो भागों में विभक्त थे- एक ऊँचाई पर स्थित पश्चिमी भाग व दूसरा निचले इलाके में स्थित अपेक्षाकृत बड़ा पूर्वी भाग (आम नागरिकों हेतु), किंतु कुछ नगर (जैसे-धौलावीरा) तीन भागों में भी विभक्त थे।
- लोथल एक बंदरगाह नगर था जो भोगवा नदी के तट पर स्थित था।
- नागेश्वर और बालाकोट सैंधवकालीन औद्योगिक बस्तियाँ थीं, जो शंख से बनी चूड़ियाँ तथा पच्चीकारी निर्माण के विशिष्ट केन्द्र थे।

कलाम ACADEMY

114. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- धौलावीरा, देसलपुर, सुरकोटड़ा, जुनीकरण आदि हड़प्पा नगर कच्छ, गुजरात में स्थित है।
- रंगपुर, प्रभासपटन, रोजदी, लोथल आदि काठियावाड़, गुजरात में स्थित है।

115. उत्तर (2)

व्याख्या:- कालीबंगा, लोथल, राखीगढ़ी एवं बनावली आदि हड़प्पाई नगरों से अग्निकुण्ड के साक्ष्य मिले हैं।

116. उत्तर (1)

व्याख्या:-

सभ्यता स्थल - प्राप्त साक्ष्य

- मोहनजोदड़ो - अवतल चक्कियाँ
- हड़प्पा - कब्रिस्तान आर-37
- लोथल - सीप उद्योग के साक्ष्य
- कुनाल - चाँदी के मुकुट

117. उत्तर (4)

व्याख्या:- शोर्तुघई उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान में स्थित हड़प्पीय व्यापारिक बंदरगाह था।

118. उत्तर (2)

व्याख्या:-

सैंधव नगर - संबंधित नदी

- कोटदीजी - सिन्धु
- मांडा - चिनाब नदी
- राखीगढ़ी - घग्घर
- सोत्काकोह - शादीकौर

119. उत्तर (4)

व्याख्या:-

जैन तीर्थंकर - प्रतीक

- सम्भवनाथ - अश्व
- शान्तिनाथ - हरिण
- मल्लीनाथ - कलश
- अरिष्टनेमी - शंख

120. उत्तर (2)

व्याख्या:- महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के समीप कुण्डग्राम में ज्ञातृक क्षत्रिय कुल में 599 ई.पू. में हुआ। उन्हें 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद जाम्बिक ग्राम में **ऋजुपालिका नदी** तट पर शाल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ल त्रयोदशी को कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) की प्राप्ति हुई।

121. उत्तर (1)

व्याख्या:- दिगम्बर सम्प्रदाय द्वारा आहार नियंत्रण के द्वारा शरीर त्यागने की प्रक्रिया को **संल्लेखना** कहा जाता है।

श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा आहार नियंत्रण के द्वारा शरीर त्यागने की प्रक्रिया को **संथारा** कहा जाता है।

122. उत्तर (3)

व्याख्या:- महात्मा बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण की घटना वैशाख पूर्णिमा को घटित हुई थी।

महाभिनिष्क्रमण- बौद्ध साहित्य में महात्मा बुद्ध द्वारा ज्ञान प्राप्ति के लिए गृह त्याग (29 वर्ष की आयु में) की घटना 'महाभिनिष्क्रमण' कहलाती है।

123. उत्तर (1)

व्याख्या:- बुद्ध ने तृष्णा को मिटाने हेतु मनुष्य को अष्टांगिक मार्ग सुझाये है। ये अष्टांगिक मार्ग है-

1. सम्यक् दृष्टि	2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाक्	4. सम्यक् कर्मान्त
5. सम्यक् आजीव	6. सम्यक् प्रयत्न
7. सम्यक् स्मृति	8. सम्यक् समाधि

124. उत्तर (2)

व्याख्या:-

बौद्ध संगीति	समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष	विशेष विवरण
प्रथम	483 ई.पू.	सप्तपर्णी गुफा (राजगृह)	अजातशत्रु	पूरन महाकस्यप	बौद्ध की शिक्षाओं को सुत्त पिटक व विनय पिटक में संकलित किया गया।
द्वितीय	383 ई.पू.	वैशाली	कालाशोक	सर्वकामनी (सावकमीर)	बौद्ध भिक्षु दो भागों में विभक्त- 1. स्थाविर या थेरवादी (महाकच्चायन के नेतृत्व में) 2. महासांघिक या सर्वास्तिवादी (महाकस्यप के नेतृत्व में)
तृतीय	251 ई.पू.	पाटलिपुत्र	अशोक	मोगलीपुत्त तिस्स	अभिधम्म पिटक का संकलन
चतुर्थ	प्रथम शताब्दी ई.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	वसुमित्र (उपाध्यक्ष - अश्वघोष)	बौद्ध धर्म दो भागों में विभक्त - हीनयान व महायान। हीनयान (बुद्ध एक महान पुरुष) महायान (बुद्ध ईश्वर का अवतार)

कलाम ACADEMY

125. उत्तर (3)

व्याख्या:- सत्यमेव जयते **मुण्डक** उपनिषद से लिया गया है।
छांदोग्य उपनिषद् में शौनक तथा अभिप्रतारि नामक दो ऋषियों व एक भिखारी के मध्य हुए वार्तालाप का भी वर्णन मिलता है।
माण्डूक्योपनिषद् में तो केवल 12 वाक्य हैं। (सबसे छोटा)

126. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- दसराज्ञ युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद के सातवें मण्डल में मिलता है। यह रावी नदी (परूषणी नदी) के तट पर भरत जन तथा दस राजाओं के एक संघ के मध्य हुआ। इस युद्ध का कारण राजा सुदास द्वारा अपने पुरोहित विश्वामित्र को हटाकर वशिष्ठ को अपना पुरोहित बनाना था।

127. उत्तर (4)

व्याख्या:-

क्रं.	वेद	उपवेद	ब्राह्मण ग्रंथ	उपनिषद	पुरोहित	विशेष
1.	ऋग्वेद	आयुर्वेद	ऐतरेय, कौषितकी	ऐतरेय, कौषितकी	होता	10 मण्डल, 1028 सुक्त
2.	यजुर्वेद	धनुर्वेद	शतपथ, तैतिरीय	कंठ, ईश, श्वेताश्वर, मैत्रायणी	अध्वुर्य	गद्य व पद्य दोनों में। पांच शाखाएँ-काठक, कपिष्ठल, मैत्रीयणी, तैतिरीय, वाजसनेयी
3.	सामवेद	गन्धर्व वेद	पंचविश या ताण्ड्य	छान्दोग्य, जैमिनीय	उद्गाता	संगीत प्रधान (सूर्य की स्तुति)
4.	अथर्ववेद	शिल्पवेद	गोपथ	मुण्डक, प्रश्न, मांडूक्य	ब्रह्म	जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, रोगनिवारण, औषधि प्रयोग का उल्लेख

128. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- विदथ, सभा व समिति ऋग्वैदिक कालीन संस्था थी।
- सभा व समिति को अथर्ववेद में प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

129. उत्तर (3)

व्याख्या:-

क्र.सं.	षड्दर्शन	प्रवर्त्तक
1.	सांख्य दर्शन	**कपिल मुनि**
2.	योग दर्शन	**पतंजलि**
3.	न्याय दर्शन	**गौतम**
4.	वैशेषिक दर्शन	**कणाद**
5.	पूर्व मीमांसा दर्शन (मीमांसा दर्शन)	**जैमिनी**
6.	उत्तर मीमांसा (वेदान्त) दर्शन	**व्यास**

130. उत्तर (1)

व्याख्या:-ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पुरुषसूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख सबसे पहले मिलता है।

131. उत्तर (1)

व्याख्या:- ऋग्वैदिककालीन समाज में विधवा विवाह, पुरुषों में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी एवं बाल विवाह, सती प्रथा व पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।

132. उत्तर (2)

व्याख्या:- **अनेकांतवाद** जैन धर्म का तत्वमीमांसीय सिद्धांत है। यह धर्म अनेक सत्ताओं को स्वीकार करता है, इसीलिए यह धर्म अनेकात्मावाद (बहुत सी आत्माओं का सिद्धांत) को मानता है।

- **स्यादवाद** (सप्तभंगीनय) जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत है, इसके अनुसार ज्ञान सापेक्षिक होता हैं। अर्थात् हम एक साथ सभी पहलुओं को नहीं जान पाते है। यह जैन धर्म का ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है।

133. उत्तर (4)

व्याख्या:- उत्तराध्ययन सूत्र जैनधर्म के श्वेतांबर पंथ का धर्मग्रन्थ है। इस ग्रंथ में महावीर स्वामी के निर्वाण के कुछ समय पूर्व दिए गए उपदेशों का संकलन है। इसमें कमलावती नामक रानी का उल्लेख मिलता है जो अपने पति को सन्यास लेने के लिए समझा रही है।

134. उत्तर (4)

व्याख्या:- जैन धर्म में पाँच मुख्य नियम(महाव्रत) बतलाए गए है, जो निम्नलिखित है-

महाव्रत	अर्थ
अहिंसा	प्राणी मात्र के प्रति दया, समानता और उपकार की भावना
सत्य	प्रत्येक परिस्थिति में सत्य वचन बोलना
अस्तेय	चोरी नहीं करना
अपरिग्रह	संग्रह नहीं करना
ब्रह्मचर्य	विषय-वासनाओं से दूर रहना

135. उत्तर (4)

व्याख्या:- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ '**विजेता**' होता है अर्थात् जिसने **स्वयं पर विजय** प्राप्त कर ली है।

136. उत्तर (1)

व्याख्या:- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

137. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर तथा प्रथम ऐतिहासिक तीर्थंकर थे।
- इनके द्वारा प्रतिपादित मार्ग पर चलकर सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करने वाले **निर्ग्रन्थ** कहलाये।

138. उत्तर (1)

व्याख्या:- बौद्ध धर्म के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील एवं अस्थायी है। जिसे क्षणिकवाद कहा जाता है।

139. उत्तर (1)

व्याख्या:- ऋग्वेद में 100 पतवार वाली नाव का उल्लेख है जो उस समय के व्यापार और समुद्री यात्राओं में नावों के उपयोग को दर्शाता है। इस वेद में 100 पतवारों वाली नाव को एक शक्तिशाली और उन्नत नौका के रूप में वर्णित किया गया है।

140. उत्तर (1)

व्याख्या:- वैदिक काल में राजनीतिक संगठन का अवरोही क्रम **(बड़े से छोटे की ओर) राष्ट्र > जन > विश > ग्राम > कुल ।**

141. उत्तर (3)

व्याख्या:-

वेद	संबंधित उपनिषद
• ऋग्वेद –	ऐतरेय, कौषितकी
• यजुर्वेद –	तैत्तिरीय, वृहदारण्यक, कंठ, ईश, श्वेताश्वर, मैत्रायणी
• सामवेद–	छान्दोग्य, जैमिनीय
• अथर्ववेद–	मुंडक, प्रश्न, मांडूक्य

142. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- ऋग्वैदिक युग के निवासी मूलत: प्रकृति उपासक थे। उनका धार्मिक जीवन सरल व आडम्बर रहित था। वैदिक काल में क्षत्रिय तथा वैश्य को यज्ञ करने का अधिकार था। वहीं शूद्रों तथा औरतों को यज्ञ (अनुष्ठान) करने का कोई अधिकार नहीं था।

143. उत्तर (1)

व्याख्या:- **थेरीगाथा**- सुत्त पिटक का हिस्सा है इसमें भिक्षुणीयों द्वारा रचित छंदों का संकलन किया गया है।

144. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- सैंधव सभ्यता से आखेट व संगीत के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यहाँ के स्त्री व पुरुष दोनों ही आभूषण प्रेमी थे, कई शवाधानों से आभूषण प्राप्त हुए है। सैंधव समाज मातृसत्तात्मक था। सैंधव समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार थी।

145. उत्तर (4)

व्याख्या:- भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण से संबंधित महत्त्वपूर्ण पुस्तकें और उनके लेखक –

पुस्तक	लेखक
• मोहनजोदड़ो एण्ड द इंडस सिविलाईजेशन–	जॉन मार्शल
• द स्टोरी ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजी–	एस.एन.राव
• द मिथिकल मैसेकर एट मोहनजोदड़ो–	जी.एफ.डेल्स
• अर्ली इंडस सिविलाईजेशन, 1948–	अर्नेस्ट मैके
• हड़प्पा–1946, एंशिएंट इंडिया (जर्नल)–1947, माई आर्कियोलॉजिकल मिशन टू इंडिया एंड पाकिस्तान	आर.ई.एम. व्हीलर

146. उत्तर (1)

व्याख्या:- मोहनजोदड़ो से प्राप्त मानकीकृत मुद्रा में **पुरोहित राजा** की पत्थर की मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें इन्हें कढ़ाईदार वस्त्र **(त्रिफुलाकृतिक)** पहने दिखाया गया है।

147. उत्तर (4)

व्याख्या:-

सिंधु घाटी सभ्यता स्थल	वर्तमान स्थिति
शोर्तुघई, मुण्डीगाक	अफगानिस्तान
सुत्कागेण्डोर, सुत्काकोह, बालाकोट	ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो,चन्हूदड़ो,कोटदीजी,जुदीरजोदड़ो	सिंध (पाकिस्तान)
हड़प्पा, गनेरीवाला, रहमान ढ़ेरी, सरायखोला	पंजाब (पाकिस्तान)
कालीबंगा, पीलीबंगा	राजस्थान
आलमगीरपुर, हुलास	उत्तरप्रदेश
धौलावीरा, देसलपुर, सुरकोटड़ा, जुनीकरण	कच्छ, गुजरात
रंगपुर, प्रभासपाटन, रोजदी, लोथल	गुजरात
रोपड़, बाड़ा, संघोल	पंजाब (भारत)
राखीगढी, बनावली, मीताथल	हरियाणा
दैमाबाद	महाराष्ट्र

कलाम ACADEMY

148. उत्तर (4)

व्याख्या:- वैदिक काल में प्रयुक्त शब्दावली -

- वस्त्र बुनाई के लिए कार्य-वयन
- करघे का कार्य-तंत्र
- बुना हुआ वस्त्र-वसन
- धागे का सूत का कार्य - सूत्रण या सूत्रकर्म
- तंतु - धागा या सूत।

149. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- उपनिषद् उत्तरवैदिक ग्रंथों का हिस्सा थे। जिसका शाब्दिक अर्थ है **'गुरु के समीप बैठना'**।
- उपनिषदों को वैदिक साहित्य के विकास का अंतिम चरण माना जाता है।
- इनमें दर्शन-शास्त्र की विवेचना हुई है।
- वैदिक साहित्य के **अंतिम भाग** होने के कारण तथा वैदिक दर्शन के विकसित रूप के कारण इन्हें **वेदांत** भी कहा जाता है। उपनिषदों के अनुसार आत्म तथा ब्रह्म एक ही है।

150. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में भूमिसूक्त है, जिसमें पृथ्वी की महत्ता का प्रतिपादन है। इसी में कहा गया है- **माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।** अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।

कलाम ACADEMY